University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

M.Phil. Course in Jain Studies

Examination - 2020-21

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

एम.फिल/पीएच.डी. कोर्स वर्क का पाठ्यक्रम

एम.फिल/पीएच.डी. आवेदकों को प्रथम सेमेस्टर कोर्स वर्क के रूप में करना होगा। इसकी अवधि छः माह होगी। जिसमें निम्नानुसार कुल चार प्रश्न–पत्र होंगे–

प्रथम प्रश्न पत्र	–	शोध प्रविधि
द्वितीय प्रश्न पत्र	–	परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट वर्क) एवं पूर्व शोध कार्य की समीक्षा।
तृतीय प्रश्न पत्र	–	जैन दर्शन एवं धर्म
चतुर्थ प्रश्न पत्र	–	जैन साहित्य एवं कलाएं

प्रत्येक पत्र सौ अंको का होगा। सभी पत्रों में (द्वितीय पत्र को छोड़कर) 20 अंकों का सतत आंतरिक मूल्यांकन होगा एवं 80 अंकों की लिखित परीक्षा (कोर्स वर्क पूर्ण होने पर) होगी। लिखित परीक्षा की समयावधि तीन घंटे होगी। द्वितीय पत्र का मूल्यांकन प्रोजेक्ट वर्क के आधार पर 100 अंकों में से किया जाएगा। प्रत्येक पत्र में (आंतरिक मूल्यांकन एवं लिखित परीक्षा में पृथक–पृथक) न्यूनतम प्राप्तांक 40 प्रतिशत सहित कुल पत्रों में 50 प्रतिशत अंक उत्तीर्णांक होंगे। उत्तीर्ण होने पर ही एम.फिल. के द्वितीय सेमेस्टर में प्रवेश/पीएच.डी. हेतु पंजीयन संभव होगा।

प्रथम प्रश्न–पत्र : शोध प्रविधि

परीक्षा समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 100 अंक
लिखित परीक्षा : 80 अंक
सतत आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

प्रथम इकाई :

1. शोध और आलोचना
2. भारत में शोध की परम्परा
3. शोध की समस्याएं

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

4. शोध के विविध आयाम
   (i) सांस्कृतिक
   (ii) ऐतिहासिक
   (iii) सामाजिक
5. शोध की पद्वतियां और प्रकार
6. अन्तर अनुशासनिक शोध
7. तुलनात्मक शोध
8. समाज और वैज्ञानिक शोध

द्वितीय इकाई :

शोध प्रकिया –

1. क्षेत्र निर्धारण
2. प्राक्कल्पना
3. विषय–चयन
4. रूपरेखा निर्माण
5. सामग्री एवं तथ्य संकलन तथा स्रोतों की पहचान
6. संकलन की विधि एवं साधान
7. संकलित सामग्री का विश्लेषण और वर्गीकरण
8. प्रबंध लेखन
   (i) भूमिका एवं परिशिष्ट लेखन
   (ii) नामानुक्रमणिका निर्माण
   (iii) अनुच्छेदीकरण
   (iv) पाद टिप्पणी, उद्वरण एवं संदर्भ
   (v) संदर्भ ग्रंथ सूची
   (vi) प्रबंध का सार संक्षेपक्ष
   (vii) प्रबंध की प्रस्तुति
9. शोध पत्र का लेखन

तृतीय इकाई :

1. शोध कार्य में कम्प्यूटर और अन्य अद्यतन तकनीकों का प्रयोग
2. शोध की वैज्ञानिकता
3. शोध की भाषा, वर्तनी का मानकीकरण और वाक्य विन्यास
4. शोध की आचार संहिता
5. शोध : उपलब्धियां, सीमाएं समस्याएं एवं समानताएं

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

चतुर्थ इकाई :

पाठालोचन :

1. पाठ विकृतियां
2. पाठानुसंधान की भ्रांतियां एवं निवारण
3. लिपि की समस्याएं/लिप्यान्तरण
4. पांडुलिपि संरक्षण
5. पाठ सम्पादन

सहायक पुस्तकें :

1. शोध प्रविधि – विनय मोहन शर्मा, नेशनल, दिल्ली
2. हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा – मनमोहन सहगल, पंचशील, जयपुर
3. अनुसंधान : प्रविधि और क्षेत्र – राजमल बोरा, राधाकृष्ण, दिल्ली
4. शोध और सिद्वांत – नगेन्द्र, नेशनल, दिल्ली
5. पांडुलिपि विज्ञान – सत्येन्द्र, रा.हि.ग्र. अकादमी, जयपुर
6. शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक काव्य विधि – बेजनाथ सिंहल, वाणी, दिल्ली

<u>द्वितीय प्रश्न–पत्र : पूर्व शोध कार्य की समीक्षा एवं परियोजना कार्य</u>

प्रथम इकाई : पूर्व शोध कार्य की समीक्षा **पूर्णांक – 100**

(क) पूर्व शोध कार्य की समीक्षा : प्राक्कल्पना एवं शोध प्रतिमानों के निर्वाह का आकलन

1. शोध प्रबंध (प्रकाशित/अप्रकाशित)
2. शोध पत्र
3. आलेख/पुस्तक समीक्षा

(ख) वर्तमान शोध प्रस्ताव

1. क्षेत्र
2. प्राक्कल्पना
3. विषय निर्वाचन
4. प्रस्तावित विषय से सम्बद्व अद्यतन सामग्री
5. विषय का औचित्य

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

6. विषय का व्यापक महत्व
   - (i) ज्ञानात्मक
   - (ii) सामाजिक
   - (iii) सांस्कृतिक आदि

(ग) जैन अभिलेखों के अध्ययन हेतु भ्रमण

द्वितीय इकाई : परियोजना कार्य

विषय डी.आर.सी. द्वारा निर्धारित होगा। इस कार्य का मूल्यांकन विश्वविद्यालय नियमानुसार होगा।

तृतीय प्रश्न–पत्र : जैन दर्शन एवं धर्म

परीक्षा समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 100 अंक
लिखित परीक्षा : 80 अंक
सतत् आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

प्रथम इकाई :

(क) जैन चिंतन के मूल तत्व

1. भारतीय दार्शनिक चिंतनधारा
   - (i) आस्तिक दर्शन
   - (ii) नास्तिक दर्शन

द्वितीय इकाई :

(ख) जेन चिंतन की विशिष्टताएं

1. तत्त्व मीमांसा – जीव, अजीव आदि सात तत्त्व, वस्तु–व्यवस्था
2. ज्ञान मीमांसा – प्रमाण, नय, स्याद्वाद आदि
3. आचार मीमांसा – देश चारित्र एवं सकल चारित्र

Raj Jain

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

तृतीय इकाई :

(ग) जैन धर्म का विकास

1. ऐतिहासिक विकास क्रम
2. अन्य धर्मों से अन्तःसंवाद (अन्तक्रिया)

चतुर्थ इकाई :

(घ) जैन धर्म का व्यवहार पक्ष

1. धार्मिक रीति, क्रियाकलाप आदि
2. जैन जीवन शैली
   (i) श्रावकाचार
   (ii) श्रमणाचार

सहायक पुस्तकें :

1. भारतीदय दर्शन, राधाकृष्णन, राजपाल, नई दिल्ली
2. जैन धर्म का ऐतिहासिक विकास क्रम, डा. सागरमल जैन
3. तत्त्वार्थ सूत्र, उमास्वामी
4. द्रव्यसंग्रह, मुनि नमीचन्द, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
5. आलाप पद्वति, देवसेनाचार्य, श्री शन्तिवीर नगर, श्री महावीरजी
6. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, आ. समन्तभद्र, भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली
7. अनेकान्त एवं स्याद्वाद, डॉ. हुकम चंद भारिल्ल, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
8. जिनवरस्य नयचक्रम, डॉ. हुकम चंद भारिल्ल, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
9. न्याय मन्दिर, वीरसागर जैन, जैन विद्या प्रकाशन संस्थान, श्री महावीर जी
10. जैन परम्परा और श्रमण संस्कृति, सं. डॉ. धरम चंद जैन, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
11. जैन धर्म : परिचय, पं. कैलाशचंद्र शास्त्री
12. जिनधम्मो, आ. नानेश, अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

चतुर्थ प्रश्न–पत्र : जैन साहित्य एवं कलाएं

परीक्षा समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 100 अंक
लिखित परीक्षा : 80 अंक
सतत आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक

प्रथम इकाई :

(क) जैन दर्शनिक एवं पौराणिक साहित्य : सामान्य परिचय

द्वितीय इकाई :

(ख) जैन ललित साहित्य : सामान्य परिचय

1. सर्जनात्मक साहित्य
   (i) प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाएं
   (ii) प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषा में रचित साहित्य

तृतीय इकाई :

(ग) जैन मूर्तिकला, स्थापत्य कला, चित्रकला, संगीत आदि का सामान्य परिचय

चतुर्थ इकाई :

(घ) जैन सौन्दर्य शास्त्र : सामान्य परिचय

सहायक पुस्तकें :

1. जैन धर्म का मौलिक इतिहास, आ. हस्तिमल, जैन इतिहास संरक्षक संस्थान, जयपुर
2. जैन साहित्य और इतिहास, नाथूराम प्रेमी, संशोधित साहित्यमाला, बम्बई
3. जैन साहित्य का इतिहास, पं. कैलाश चंद शास्त्री, श्री गणेश प्रसाद वर्णी जैन ग्रंथमाला, वाराणसी
4. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परंपरा, डॉ. नेमीचंद ज्योतिषाचार्य, भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत् परिषद, सागर

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

5. हिन्दी जैन साहित्य का वृहद् इतिहास, डा. शितिकण्ठ मिश्र, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी
6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डॉ. हीरालाल जैन, प्रकाशक–कला एवं संस्कृति विभाग, राज. सरकार, जयपुर
7. जैन मूर्ति कला, डॉ. मारूति नन्दन तिवारी
8. जैन कला एवं स्थापत्य (तीन भागों में), सं. अमलानंद घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
9. यशस्तिलक का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. गोकुलचंद जैन, पार्श्वनाथ शोध संस्थान, वाराणसी

एम.फिल द्वितीय सेमेस्टर का पाठ्यक्रम

पाठयक्रम की अवधि छः माह होगी। जिसमें निम्नानुसार कुल चार प्रश्न–पत्र होंगे–

प्रथम प्रश्न–पत्र : जैन धर्म – दर्शन के आधारभूत ग्रंथ

अंक : 100
आंतरिक : 20
परीक्षा : 80

निर्धारित ग्रंथ :

1. तत्त्वार्थ सूत्र (सवार्थ सिद्धि टीका सहित)
   प्रथम अध्याय
   प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
2. छहढाला
   तीसरी ढाल (पं. दौलतराम, प्रकाशक, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर)

(दोनों पुस्तकों से धर्म–दर्शन केन्द्रित 4 प्रश्न पुछे जायेंगे। जिनमें दो प्रश्न निर्धारित अंश के विश्लेषण एवं व्याख्या से संबंधित होंगे तथा दो प्रश्न धर्म अथवा दर्शन पक्ष पर होंगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प होंगे।)

Raj Jain

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

सहायक पुस्तकें –

1. मोक्षमार्ग प्रकाशक, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
2. तत्त्वार्थ वार्तिक, महेन्द्र कुमार जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
3. द्रव्यसंग्रह, मुनि नेमीचंद, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
4. छहढाला, बुधजन, नरसिंहपुरा समाज, इन्दौर
5. सवार्थसिद्वि, देवनंदी पज्यपाद, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

द्वितीय प्रश्न–पत्र : जैन–आचार–मीमांसा

निर्धारित विषय

1. कर्म सिद्वांत – कर्म–स्वरूप, कर्म के प्रकार, कर्मबंध एवं उसके भेद, करण सिद्वांत (कर्म की बंध, उदय आदि अवस्थाएं) पुनर्जन्म, कर्म फल, भाग्य आदि।
2. पंचमहाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति, दशविध यतिधर्म, 22 परीषह, द्वादश अनुप्रेक्षाएं, अणुव्रत, श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएं
3. जैन आचार मीमांसा की सामयिक प्रासंगिकता
   विश्वशांति, राष्ट्रप्रेम, साम्प्रदायिक सद्‌भाव, पर्यावरण संरक्षण, तप–त्याग, सामाजिक समरसता, व्यवहार–नय (पक्ष) आदि के विशेष संदर्भ में।

(इस पत्र में प्रत्येक इकाई से न्यूनतम एक प्रश्न चुनते हुए कुल चार प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायेंगे।)

सहायक पुस्तकें :

1. आचारंग सूत्र, नेमीचंद बांठिया, श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर
2. कर्मवाद, आचार्य महाप्रज्ञ, आदर्श साहित्य संघ, नई दिल्ली
3. मूलाचार, आ. वट्टकेर, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
4. कर्म सिद्वांत, डॉ. नरेन्द्र भानावत
5. जैन धर्म और पर्यावरण, भागचंद जैन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, दिल्ली
6. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, आ. समन्तभद्र, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
7. पुरूषार्थ सिद्ध्युपायं, आ. अमृतचंद्र, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
8. तत्त्वार्थसूत्र (अध्याय 6 एवं 8), पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

तृतीय प्रश्न–पत्र : जैन सामाजिक चिंतन

अंक : 100
आंतरिक : 20
परीक्षा : 80

निर्धारित विषय

1. व्यक्ति – आत्म – स्वातंत्र्य, आत्मकर्तृत्व एवं भोक्तृत्व, आत्म–विकास, स्त्री की प्रस्थिति–शिक्षा, दीक्षा, समानता आदि, आत्मा की समानता
2. परिवार–विवाह–संस्था, संस्कार–विधान, बहु पत्नी प्रथा, सती प्रथा, पारिवारिक दायित्व एवं जैन दृष्टिकोण
3. समाज–चतुर्विध संघ, व्यक्ति एवं समस्त समाज की सापेक्षता, सामाजिकता का आधार – कर्तव्यबोध, जातिवाद का विरोध, कर्मणा वर्ण व्यवस्था, दशविध धर्म

(इस पत्र में व्यक्ति, परिवार तथा समाज विषयक जैन चिंतन, इनके अंतसंबंध, अधिकार कर्तव्य आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जायेंगे। छात्र को प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न चुनते हुए कुल 4 प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायेंगे।)

सहायक पुस्तकें :

1. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डॉ. हीरालाल जैन, प्रकाशक–कला एवं संस्कृति विभाग, राज. सरकार, जयपुर
2. जैन धर्म का इतिहास, कैलाश चंद जैन, डी.के. प्रिन्टवर्ल्ड, नई दिल्ली
3. जैन संस्कृति कोश, प्रो. भागचंद जैन, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर
4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डॉ. हरशिचंद्र श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल
5. जैन धर्म, दर्शन, संस्कृति भाग– 1 से 7, डॉ. सागरमल जैन, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

Raj Jain
Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur

6. जैन दर्शन एवं संस्कृति का इतिहास, डॉ. भागचंद भास्कर, नागपुर विद्यापीठ प्रकाशन, नागपुर

7. भारतीय संस्कृति को जैन अवदान – डॉ. नेमीचंद जैन, हीराभैया प्रकाशन, इन्दौर

8. डॉ. सागरमल जैन अभिनंदन ग्रंथ (समाज और संस्कृति खण्ड), पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वार.णसी, 1998

चतुर्थ प्रश्न–पत्र : शोध निबंध

अंक : 100

इस पत्र के अंतर्गत छात्र को निर्धारित विषय पर एक शोध–निबंध (लघु शोध प्रबंध) प्रस्तुत करना होगा।

Raj | Jain

Dy. Registrar (Academic-I)
University of Rajasthan
Jaipur